सफलता की कहानी

जागरूक पशुपालक के रूप में वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत नोहर के राजेश कुमार

पशुपालन हमेशा से ही राजस्थान के किसानों का कृषि के साथ–साथ आय का प्रमुख साधन रहा है। वर्तमान में जहां बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर रखा है, ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में रोजगार के अवसर युवाओं के लिए अपार संभावनाएं लिए हुए हैं। गोपालन को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफल हुए हनुमानगढ़ जिले के नोहर तहसील के फेफाना गांव के निवासी राजेश कुमार ने नव युवकों के लिए एक मिसाल कायम की है। कृषि व्यवसाय को घाटे का सौदा कहने वाले लोगों के लिए फेफाना के इस युवा प्रगतिशील किसान ने नई नजीर पेश करते हुए यह दर्शाने का प्रयास किया है कि समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर यही कृषि एक फायदे का सौदा साबित हो सकती है। प्रगतिशील किसान राजेश कुमार ने बताया कि संयुक्त परिवार में रहने के चलते अकेले खेती कार्य से पारिवारिक खर्च चला पाना बड़ा कठिन सा हो रहा था। करीब 2 वर्ष पूर्व वह कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के विशेषज्ञों के पास गया और कृषि के क्षेत्र में आमदनी बढ़ाने की सलाह मांगी। इस पर केन्द्र ने राजेश कुमार को खेती के साथ डेयरी फार्मिंग अपनाने की सलाह दी। राजेश कुमार ने पशुपालन व्यवसाय को वैज्ञानिक तरीके से करने की सोची और पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। इन प्रशिक्षणों से राजेश कुमार को काफी फायदा हुआ, इन प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, संतुलित आहार इत्यादि की जानकारी प्राप्त कर, उसे अपनाया और एक सफल पशुपालन बने। वर्तमान में इनके पास 2 एकड़ जमीन के साथ 11 एच.एफ. नस्ल की गाय, 3 देशी नस्ल की गाय व 4 बछड़े–बछड़ियां हैं जिनसे प्रतिदिन 60–70 लीटर दूध उत्पादन करते हैं वे उन्नत नस्ल की गाय तैयार करके विक्रय भी करते हैं। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग पांच लाख रूपये तक हो जाती है। राजेश कुमार एक जागरूक पशुपालन के रूप में वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बने हैं। **सम्पर्क- राजेश कुमार, गांव फेफाना तहसील नोहर (हनुमानगढ़)(मो. 8209335008)**

सफलता की कहानी

मधुमक्खी पालन स्वःरोजगार से गांव में प्रकाश

अगर जिन्दगी में आगे बढ़ना है तो नए विचारो पर कार्य करना होगा। सही योजनाएं एवं प्रशिक्षण के जरिये आप भी अपनी जिन्दगी में बदलाव ला सकते है। वैसे भी कोरोना माहमारी ने लोगों को बहुत कुछ सिखा दिया है, जो लोग अपने घर के आसपास रहकर ही कुछ करना चाहते है उनके लिए बहुत सारे स्वःरोजगार के विकल्प खुले है, जिसमें मधुमक्खी पालन छोटे व भूमिहीन किसानों के लिए स्वःरोजगार का एक काफी अच्छा विकल्प हो सकता है। हम बात कर रहें है, हनुमानगढ़ जिले की नोहर तहसील के गांव–ढाणी अराईयान के एक ऐसे ही मध्यम वर्गीय परिवार के आठवीं पास युवा किसान प्रकाश सिंह जटसिख की, जिसने मधुमक्खी पालन को अपना स्वःरोजगार का साधन बनाया। प्रकाश सिंह की पढ़ाई में रूचि नहीं होने के कारण उन्होंने आठवीं कक्षा के बाद पढाई छोड़ दी और वे अपने पिता के साथ खेती करने लगे। प्रकाश सिंह के पास पुस्तैनी जमीन में 10 बीघा सिंचित व 10 बीघा असिंचित भूमि क्षेत्र है जिसमें परम्परागत तरीके और वर्षा आधारित खेती से वे प्रतिवर्ष ग्वार, मूंग, मोठ, चना व सरसों इत्यादि की फसल लेते रहें। परन्तु उन्हें खेती में मनचाह मुनाफा नहीं मिलने के कारण उन्होनें खेती के साथ–साथ कोई और स्वःरोजगार करने की सोची। वर्ष 2016 में उन्होनें मधुमक्खी पालन करना आरम्भ किया। शुरूआत में वे 30 बक्से खरीद कर लायें परन्तु उचित जानकारी व प्रशिक्षण न होने के कारण उन्हें प्रथम एक से दो वर्ष कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ा तथा इन परेशानियों से निराश होने लगे, परन्तु उन्होनें मधुमक्खी पालन करना नहीं छोड़ा और वे एक दिन सोशल मीडिया के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के सम्पर्क में आयें उन्होनें केन्द्र के विशेषज्ञों की राय के अनुसार अपने मधुमक्खी पालन रोजगार को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर से मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन विषय पर चार दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। इस प्रकार वे मधुमक्खी पालन में निरन्तर प्रगति करते हुए वर्तमान में प्रकाश सिंह के पास कुल 215 मधुमक्खी पालन के बक्से है, जिससे उन्हें शहद, मोम, प्रोपोलस इत्यादि उत्पाद बेचकर प्रतिवर्ष लगभग 3000 रू. प्रति बाक्स आय प्राप्त होती है उन्होनें इस रोजगार में एक सहायक सहयोगी भी रख–रखा है उसकी मजदूरी, परिवहन लागत व अन्य सभी खर्चो के बाद उन्हें 4.15 लाख रू. की शुद्व आय मधुमक्खी पालन से प्राप्त हो जाती है। उनकी इस कामयाबी के चलते गांव के अन्य बेरोजगार युवा भी स्वःरोजगार की ओर बढ़ रहे हैं। प्रकाश सिंह निरन्तर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के विशेषज्ञों के सम्पर्क में रहकर अन्य युवाओं को भी केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के लिए प्रेरित कर रहें हैं।

सम्पर्क- प्रकाश सिंह जटसिख गांव-ढाणी अराईयान, नोहर जिला हनुमानगढ़ (मो. 9079204246)